झारखण्ड के धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति : एक अध्ययन–(2000 ई.से 2023 ई.तक)।

पीएच.डी. पंजीयन हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

2023

शोध–निर्देशिका

डॉ माधुरी कुमारी

सहायक प्राध्यापिका,

बी. एस. सिटी. कॉलेज, बोकारो

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद

शोधार्थी

मो0. असगर अन्सारी

इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

,धनबाद

झारखण्ड के धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति : एक अध्ययन–2000 ई से 2023 ई तक

परिचयः (Introduction)

किसी व्यक्ति, समुदाय, क्षेत्र या सामाजिक वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन ऐतिहासिक शोध में एक महत्वपूर्ण आयाम रहा है, जिसके अंतर्गत अतीत में व्यक्तियों, समुदायों या समाजों की सामाजिक– आर्थिक स्थितियों की जांच कर भविष्य के सुझाव प्रस्तुत करना सम्मिलित है। इस प्रकार के शोध में उन ऐतिहासिक सन्दर्भों को समझने का प्रयास किया जाता है जिस पर किसी समुदाय , क्षेत्र या सामाजिक वर्ग की सामाजिक–आर्थिक स्थिति निर्भर करती है। महिलाएं मानव जाति की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। मानव जाति का अस्तित्व निश्चित रुप से महिलाओं की अस्तित्व पर निर्भर करती है। ऐतिहासिक काल से ही महिलाओं को समाज के प्रगति के साथ वो हक नहीं मिल सका जिसका वो वास्तविक हकदार रही है। भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है जहाँ लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है। भारत संस्कृतियों, धर्मों और परम्पराओं की समृद्ध विविधता वाला देश है। ऐतिहासिक रुप से, भारत में मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को कई सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। इन चुनौतियों ने सामाजिक, आर्थिक अवसरों और सार्वजनिक जीवन तक उनकी पहुँच को प्रतिबंधित किया है।

प्रस्तावित शोध जिसका शीर्षक 'धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का एक ऐतिहासिक अध्ययन है।' अनुसंधान के दृष्टि से समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक एवं अत्यंत महत्व का विषय है। यह एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का अनुसंधान होगा जिसमें प्राथामिक एवं ्द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं आकड़ों का उद्देश्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया जायेगा। इतिहास में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विभिन्न समय के परिप्रेक्ष्य में लंबे समय से अध्ययन होता आ रहा है किंतु झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले के परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन एक नवीन शोध होगा। अन्य धर्म के साथ अगर तुलना किया जाए तो मुस्लिम धर्म में महिलाओं की सामाजिक गतिविधि में धर्म का हस्तक्षेप ज्यादा है।सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण ,वह उच्च शिक्षा हासिल नहीं कर पा रही हैं, जिससे वह समाज में पिछड़ते चली जा रही है। इस शोध के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं के पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाना है।

धनबाद जिले की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 28,46,954 है, इसमे पुरुषों की आबादी लगभग 14,98,305 एंव महिलाओं की 13,48,649 है। अगर मुस्लिम आबादी की बात की जाए तो इसकी कुल आबादी लगभग 4,31,762 है इसमें से लगभग आधी आबादी मुस्लिम महिलाओं की है। धनबाद मे शहरों की अपेक्षा गाँवों की मुस्लिम महिलाओं की स्थिति निराशाजनक है। अगर शिक्षा की बात की जाए तो शहरों में मुस्लिम महिलाएं शिक्षा के प्रति जागरुक हैं, इसलिए लड़कियाँ उच्च शिक्षा तक पहुँच रही हैं। ठीक इसके विपरीत गाँव की लड़कियाँ उच्च शिक्षा तक नहीं पहुँच पाती हैं। इस शोध के माध्यम से इसके कारणों को उजागर करना है।

मुस्लिम विधि के लगभग सभी विद्वान तलाक को सही मानते है,लेकिन बिना किसी कारणों का प्रयोग करना नैतिकता और धर्म की दृष्टि से जघन्य समझते है। पैगम्बर मोहम्मद साहब का कथन है कि "जो मनमानी रीति से पत्नी को अस्वीकार करता है, वह खुदा के शाप का पात्र होगा। पैगम्बर के निकट मनमाना तलाक अत्यंत बुरे कार्यों में से एक है। फिर भी तलाक की एक प्रक्रिया तय की गयी है, जिसमें पति द्वारा पत्नी को समझाने का प्रावधान किया गया है, फिर भी अगर आपस में अनबन होने का डर हो तो दोनो पक्ष से पंच नियुक्त करके समझाने का प्रयास करें। यदि वे दोनो रिश्तों में सुधार चाहते हो तो अल्लाह उनमें मोहब्बत पैदा कर देगा।''

मुस्लिम महिलाओं में पर्दा को ले कर भी चर्चे हैं, कि पर्दा किस प्रकार से महिलाओं को विकास की गति में अवरुद्ध है। पर्दा या बुर्का प्रथा की शुरुआत अरब देशों में हुई और भारत में इसकी शुरुआत 12वीं शताब्दी से। मुस्लिम समाज में औरतें पर्दे का प्रयोग अपने आवरण के लिए करती थी। जब भारत में मुसलमानों का शासन शुरु हुआ तो वे अपने संस्कृति का प्रचलन शुरु किया, तथा उनके अधिनस्थ सामंतों ने भी अपनाना प्रारम्भ किया।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ऐतिहासिक अनुसन्धान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय रहा और कई इतिहासकारों एवं शोधकर्ताओं ने इसके विभिन्न आयामों पर अध्ययन किया है। एक शोधपत्र जिसका शीर्षक ' **आधुनिक सामाजिक परिवर्तन एवं मुस्लिम महिलाएँ'** है वर्तमान समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम महिलाओं की समाज, अर्थव्यवस्था, व्यवसाय, साहित्य, प्रशासन में इनकी वस्तुस्थिति की समीक्षा प्रस्तुत किया है (शर्मा, 2020, 25)। इसी प्रकार दुसरे शोध पत्र अल्पसंख्यक पहचान, मुस्लिम महिला बिल अभियान एवं तात्कालिक राजनीतिक प्रक्रिया का सुक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है (हसन, 1989, 47)। कुछ चयनित मुस्लिम देशों में महिलाओं का **सामाजिक–आर्थिक और प्रशासनिक सशक्तिकरण : प्रथाएँ और मुद्दे** विषय पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन का तर्क है कि इस्लाम ने महिलाओं को उचित अधिकार दिए हैं और विभिन्न सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में उनकी भूमिका की सराहना की है। यदिं मुस्लिम महिलाएं सामाजिक–आर्थिक और प्रशासनिक गतिविधियों में भाग नहीं ले रही है, तो यह उस संस्कृति के कारण है जिसमें वह रहती है, लेकिन धर्म के कारण नहीं (अज़ीद, तौसीफ और ओथमान, 2023, 78)।

मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का विवेचना करने के लिए **शाहिदा लतीफ** अपनी पुस्तक– ''**मुस्लिम वीमेन इन इंडिया पॉलिटिकल एंड प्राइवेट रियलिटी (1990)**''– में 20वीं शताब्दी में आए सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की भुमिका के रुप में देखती है। पर्दा और घर की चारदीवारी में बंद रखने का रिवाज दक्षिण की तुलना में उत्तर भारत में अधिक था। इसी प्रकार बाल विवाह, बहु पत्नी प्रथा इस वर्ग और क्षेत्र में अधिक प्रचलित थी। लेकिन कुछ भूमिकाऐं पुरे समाज में केवल महिलाएँ ही निभाती थी। एक परिभाषित रॉल मॉडल से मुस्लिम महिलाएं अछूती नहीं थी।

मुस्लिम धार्मिक कट्टरपंथियों ने धर्म का सहारा लेकर स्त्रियों की शिक्षा तथा विकास का अधिकार छीन लिया। इसका विरोध करती हुई **जोया हसन** (हंस,पत्रिका,2013) लिखतीं है कि ''मुस्लिम औरतों का हिन्दुस्तान में आगे न बढ़ने का तथा शिक्षा न प्राप्त करने का मूल कारण गरीबी है। मुस्लिम औरतों के शैक्षणिक स्तर में कुछ हद तक सुधार हुआ है, लेकिन उतना नहीं जितना कि जनसंख्या के हिसाब से उनकी संख्या हैं। उनके विकास में सबसे बड़ी बाधा सामाजिक स्थिति का निम्न होना है, धर्म और पर्दा उतना बड़ा कारण नहीं। सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को नजरअंदाज कर मुस्लिम महिलाओं की स्थिति ठीक से नहीं समझा जा सकता।''

19वीं सदी के दौरान उत्तर भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी पर ऐतिहासिक शोध किया एवं इस दौरान मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विवेचना प्रस्तुत किया है (बानो, 2015, 10)। **वकील ताहिर हकीम** जो गुजरात उच्च न्यायलय में प्रैक्टिस करते हैं और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य है, वे कहते है–'' मुश्किल से दो चार प्रतिशत मुस्लिम माता–पिता अपनी बेटियों को कुरान के अनुसार पारिवारिक संपत्ति में हिस्सा देते हैं।''

मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2019-विवाहित मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की संरक्षा करने और उनके पतियों द्वारा तलाक की उद्घोषणा द्वारा विवाह–विच्छेद का प्रतिषेध और उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने के लिए विधेयक।

शोध समस्या का अन्वेषण (Problem to be investigated)

- प्रस्तावित शोध के अंतर्गत वर्ष 2000 के पूर्व अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को रेखाकिंत किया जाएगा। इसके अंतर्गत सामाजिक प्रावस्था, शैक्षणिक स्थिति, रोजगार, प्रशासन आदि में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी एंव स्थिति का अध्ययन किया जाएगा।

- इस शोध के अतंर्गत वर्ष 2000 के बाद अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति का आकलन किया जाएगा। इसके अतंर्गत सामाजिक प्रावस्था, शैक्षणिक स्थिति, सामाजिक निर्णयों में उनकी भागीदारी एवं प्रतिनिधित्व के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन प्रस्तावित किया जाएगा।

- शोध के माध्यम से सन् 2000 ई. के पश्चात् धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति का आंकलन किया जाएगा। इसके अतंर्गत आय, रोजगार, व्यवसाय, नौकरी–पेशा एवं अन्य आर्थिक कियाकलापों में मुस्लिम महिलाओं की उपस्थिति एवं स्थिति का परीक्षण किया जाएगा।

- प्रस्तावित शोध के अतंर्गत अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के लिए जिम्मेवार कारकों की पहचान कर विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

- प्रस्तावित शोध में अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध कार्य का उद्देश्य (Objective of the Research)

- मुस्लिम समाज में शुरुआती दौर से ही महिलाओं की स्थिति निराशाजनक रही है। समाज में कुछ अधिकार तो दिया गया मगर वास्तव में धारातल पर वह अधिकार नहीं मिला। वर्ष 2000 ई. के पूर्व मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को रेंखाकित करना इस शोध का उद्देश्य होगा ।

- झारखण्ड अलग होने के बाद धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक स्थिति में क्या बदलाव हुआ इस शोध के माध्यम से स्पष्ट करना भी उद्देश्य होगा।

- सरकार द्वारा महिलाओं के लिए विभिन्न आर्थिक योजना का शुभारंभ किया गया है, जैसे स्वयं सहायता समूह, फ्री सिलाई मशीन योजना आदि, के माध्यम से मुस्लिम महिलाएँ भी अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकती हैं। इसके लिए जागरूकता की आश्यकता है। 2000 ई. के पश्चात् अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति का आकलन करना शोध का उद्देश्य होगा।

- धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की पिछड़ेपन के लिए जिम्मेवार कारकों का पता लगाना, इस्लाम समान अधिकार की बात करता है मगर महिलाएँ आगे नहीं बढ़ पा रही है। इसके पीछे जिम्मेवार कारणों का अध्ययन करना।

- मुस्लिम महिलाओं की तरक्की और विकास के लिए कदम–से–कदम मिला कर चलना बहुत जरूरी है, तभी वे सामाजिक बंधन एवं रूढ़िवादिता से मुक्त होगी। इस शोध के माध्यम से धनबाद क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना तथा भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना भी उद्देश्य होगा।

शोध प्रश्न (Research Question)

- वर्ष 2000 के पूर्व धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति कैसी थी ?

- वर्ष 2000 के बाद अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक स्थिति कैसी रही ? एवं पूर्व के स्थिति से क्या परिवर्तन परिलक्षित हुआ ?

- वर्ष 2000 के बाद अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं के आर्थिक स्थिति कैसी है ? एंव पूर्व की स्थिति के तुलना में क्या बदलाव आया है ?

- धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने एवं पिछड़ेपन का प्रमुख कारण कौन–कौन से हैं ?

- अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति, प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर भविष्य में उनके स्थिति में सुधार के लिए क्या उपाय किए जा सकते है ?

शोध प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध एक ऐतिहासिक शोध होगा। चुँकीं यह एक विश्लेषणात्मक शोध है इसलिए आकंड़ों के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनो विधियों का उपयोग किया जायेगा। इस शोध में अध्ययन के लिए प्राथमिक एंव द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया जाएगा। अध्ययन में प्रयुक्त प्राथमिक आंकड़े स्वंय के द्वारा तैयार प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किए जायेंगे, जबकि द्वितीयक प्रकार की सूचनाएँ अन्य लेखकों के आलेख, शोधकर्ताओं के शोधपत्र ,समाचार पत्रों में प्रकाशित आलेख, पुस्तकालय, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के प्रतिवेदन, जनगणना रिपोर्ट आदि से प्राप्त किए जायेंगे। व्याख्या के लिए चित्र, आरेख, टेबल, मानचित्र आदि उपकरणों की सहायता ली जायेगी।

प्रस्तावित शोध कार्य की प्रासंगिकता (Significance of Proposed Work)

वर्ष 2000 से धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के ऐतिहासिक अध्ययन पर प्रस्तावित यह शोध कार्य कई कारणों से प्रासंगिक है। मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर एक ऐतिहासिक अध्ययन करने से समय के साथ हुए परिवर्तनों और विकासों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होगी। साथ ही उन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों को समझने में मदद मिलेगी जिसमें धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया है। इसी प्रकार मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति की जाँच करके, उन चुनौतियों और बाधाओं पर प्रकाश डाल जा सकता है तथा उन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य आवश्यक संसाधनो तक पहुंचने में

सामना करना पड़ता है। अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग इन मुद्दों के समाधान और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए लक्षित हस्तक्षेप और नीतियों को डिजाइन करने के लिए किया जा सकता है। यह अध्ययन मुस्लिम महिलाओं के सामने आने वाली सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों के बारे में वकालत करने और जागरुकता बढ़ाने के लिए एक उपकरण के रुप में काम कर सकता है। धनबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर सीमित शोध उपलब्ध है। प्रस्तावित शोध जिले में मुस्लिम महिलाओं के जीवन के अनुभवों और सामाजिक गतिशीलता में व्यापक और अद्यतन अंतर्दृष्टि प्रदान करके इस शोध अंतर को भरने मे योगदान दे सकता है। समय के साथ मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करके अन्य समुदायों या क्षेत्रों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण कर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सकती है।

शोध सीमांकन एंव भविष्य के कार्य (Research limitation and Future work)

प्रस्तावित शोध में मुख्य रुप से सामाजिक–आर्थिक स्थिति के ऐतिहासिक अध्ययन पर केंद्रित है। यह धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं तक सीमित हैं एंव इसमें 2000 ई0 से 2023 ई0 तक के काल को अध्ययन के लिए आधार बनाया गया है। इस अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अंतर्गत निर्धारित किये गये समय सीमा के दौरान इनकी सामाजिक प्रावस्था, शिक्षा, आय, रोजगार, प्रशासन में भागीदारी आदि का विश्लेषण सम्मिलित हैं।

भविष्य में इस शोध कार्य के अतिरिक्त इससे सम्बंधित अन्य शोध कार्य भी किए जा सकते है जैसे– धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अन्य किसी जिले के मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन। इसी प्रकार भविष्य के शोधकर्ता धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन कर सकते है। इसी प्रकार शोधकर्ता धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं के शैक्षणिक स्थिति सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, सशक्तिकरण आदि का ऐतिहासिक अध्ययन कर सकते हैं।

संभावित अध्यायीकरण (Tentative Chapterization)

भूमिका

अध्याय 1: वर्ष 2000 ई0 के पूर्व धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति

अध्याय 2: साल 2000 ई0 के बाद धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति

अध्याय 3: वर्ष 2000 ई0 के पश्चात् धनबाद जिले के मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति

अध्याय 4: धनबाद जिले के अन्य सम्प्रदायों की तुलना में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति

उपसंहार

ग्रंथ सूची

संदर्भ सूची (References)

1. लतीफ,शाहिदा,'*'मुस्लिम वीमेन इन इंडिया पॉलिटिकल एण्ड प्राइवेट रियलिटि''* नई दिल्ली, 1990
2. जलालुद्दीन, सैय्यद, उमरी, *''औरत और इस्लाम''* मर्कजी मकतब, नई दिल्ली, 2005
3. शाहिद मुर्तजा, *''इस्लाम में नारी का अधिकार'', 2016*
4. भट्टी जरीना, *''स्टेटस ऑफ मुस्लिम वीमेन एण्ड सोशल चेंज,''* रेडियंट पबलिशर्स, न्यू देलही , 1990
5. अलि, शुभाषिणीः लेख *''कितनी बदली भारतीय नारी''* दैनिक जागरण, 31 जनवरी, 2002
6. डॉ अजय कुमार शुक्ल, *''भारतीय मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन,''* लेख, दिसम्बर, 2021
7. बानो एस. एंव अहमद,टी, *''19वी सदी के दौरान उत्तर भारत में सामाजिक सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी,''* पीएच. डी थीसिस, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी. 2015
8. हिरजी, फैजा, *''क्लैमिंग आवर स्पेसः मुस्लिम वीमेन,एक्टिविज्म एंड सोशल मीडिया.* इस्लामोफोबिया'' स्टडी जर्नल,वॉल्यूम–06, 2015, पृष्ठ–78
9. जोया हसन, 'हंस, *''भारतीय मुसलमान''* अगस्त, 2013
10. डॉ. चौधरी, बासुकिनाथ, *''डॉमेस्टिक वॉयलेंस एगेंस्ट मुस्लिम वीमेन,''* शिवालिक प्रकाशन, 2017, पृष्ठ संख्या–25
11. नेमिशराय, मोहनदास,*''भारत की पहली मुस्लिम अध्यापिका क्रांतिकारी फातिमा शेख,''* सम्यक प्रकाशन, 2022, पृष्ठ संख्या–47
12. रहमानी, सबीहा, *''भारतीय मुस्लिम महिला एवं सशक्तिकरण,''* अध्ययन पब्लिशर्स, 2006, पृष्ठ संख्या–89
13. अय्युब, मोहम्मद,*''मुस्लिम महिलाएँ और सामाजिक परिवर्तन,''* राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या–163
14. असगर अली इंजिनियर–*''राइटस ऑफ वीमेन इन इस्लाम'*' स्ट्रीलिंग पब्लिकेशन, 2004, पृष्ठ संख्या–54